भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जीवन परिचय-:

भारतेन्दु जी का जन्म संवत 1907 में तथा देहाव्सान संवत 1941में काशी में हुआ था। वे हिन्दी साहित्य में नवीन जागरण के अग्रदूत के रूप में आये। इतिहासविदों ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के रचनाकाल को हिन्दी साहित्य की नयी धारा अथवा प्रथम उत्थान के नाम से अभिहित किया है। भारतेन्दुजी हिन्दी साहित्य में गद्य और काव्य दोनों के ही उन्नायक , प्रवर्त्तक और मूर्धन्य स्त्रष्टा थे।

भारतेन्दु जी ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने बंगला मे नए ढंग के, नवीन वस्तु विषय वाले सामाजिक, ऐतिहासिक,पौराणिक नाटक एवं उपन्यास देखे और और उस प्रकार की रचनाओं का हिन्दी मेम अभाव अनुभव किया । इस अभाव की पूर्ति के लिये उन्होंने अनुवाद भी किये, बहुत बड़ी संख्या में मौलिक कृतियाँ भी दीं तथा ' कविवचनसुधा ' नाम की एक पत्रिका भी निकाली जिसमें प्राचीन ढंग की कवितायें तथा नये ढंग के लेख रहते थे। इसके उपरान्त उन्होंने ' हरिश्चन्द्र मैगनीज ' नाम की पत्रिका निकाली जिसका नाम कुछ समय बाद बदलकर ' हरिश्चन्द्र चन्द्रिका ' हो गया। नयी सुधरी हुई और मानक हिन्दी का प्रारम्भ इसी पत्रिका से हुआ था। भारतेन्दु जी के आविर्भाव के साथ ही नये लेखक भी तैयार होने लगे ।

भारतेन्दु जी ने जिस प्रकार हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया उसी प्रकार काव्य की ब्रजभाषा का भी। प्राकृत और अपभ्रांश-काल से चले आते हुये शब्द ब्रजभाषा-काल मेम अब भी प्रचलित थे और काव्य की भाषा लोकभाषा से दूर होती जा रही थी । शब्दों की तोड़-मरोड़ और गढ़न्त की चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। भारतेन्दु जी ने इस दोष को दूर कर भाषा को लोकभाषा से संपृक्त किया जिससे उनकी काव्यभाषा की रसमयता मे वृध्दि हुई। भारतेन्दु जी की सम्पूर्ण काव्य-कृतियों की संख्या सत्तर है जिनमें से ब्रजभाषा की प्रमुख काव्यकृतियों के नाम और परिचय इस प्रकार हैं -:

1) **प्रेम मालिका-** इनमें 100 पद हैं । इसका विषय कृष्णलीला एवं दैन्य भाव की भक्ति है। इनमें संगीत तत्त्व की प्रधानता है।
2) **कार्त्तिक स्नान-** इनमे 25 पद हैं तथा लगभग इतने ही छंद और हैं जिनमें दोहे, सोरठे तथा सवैये हैं। इनका विषय कार्त्तिक मास में स्नान से पूर्व राधा-कृष्ण का जयगान है।
3) **प्रेमाश्रु वर्षण-** इसमें 46 पद हैं । राधा-कृष्ण की प्रेम-क्रीड़ा और संयोग-वियोग का वर्णन है।
4) **प्रेम तरंग-** इस कृति में ब्रज की लावनियाँ मिलती हैं जिसमें प्रेम का सुन्दर वर्णन है।
5) **प्रेम प्रलाप-** इसमें 76 पद हैं। प्रेम की विभिन्न भाव स्थितियों और दैन्यभाव की भक्ति का वर्णन है।

6) होली- इस कृति में 79 पद हैं। राधा-कृष्ण के होली मनाने का वर्णन है।

7) मधु मुकुल- इसमें अन्य भाषाओं के साथ ब्रजभाषा की लावनियाँ भी हैं। होली खेलने का वर्णन है।

8) प्रेम फुलवारी- इसमें 93 पद हैं। पाँच भागो में श्री राधिका जी की स्तुति की गयी है ।

9) कृष्ण चरित- एस कृति मेम 52 पदों मे श्री कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन किया गया है।

भारतेन्दु जी के व्यक्तित्व के प्रभाव से साहित्यकारों का एक उज्जवल मंडल गठित हो गया। इस मंडल के साहित्यकारों में निम्नलिखित नाम गिनाये जा सकते हैं –

1. पं0 प्रतापनारायण मिश्र
2. श्री बालकृष्ण भट्ट
3. ठाकुर जगमोहन सिंह
4. बद्रीनारायण चौधरी
5. श्रीनिवास दास
6. सुधाकर द्विवेदी
7. राधारचरण गोस्वामी
8. राधाकृष्ण दास

भारतेन्दु जी की अनेक रचनाओं में प्राचीन काव्यप्रवृत्तियों का दर्शन होता है।

भारतेन्दु जी की कविताओं में विषय-वैविध्य के दर्शन होते हैं। भक्ति,श्रृंगार ,देश-प्रेम, सामाजिक परिवेश, प्रकृति-सौन्दर्य सभी उनके काव्य के विषय हैं। हिन्दी के उन्नायकों में होते हुये भी उन्होंने उर्दू शैली की कवितायें भी लिखी हैं, ब्रजभाषा के रससिध्द कवि होते हुये भी खड़ीबोली को वे काव्यभाषा के रूप में अपनाते हुये दिखायी देतें हैं ।

भारतेन्दु जी राधा-कृष्ण जी के अनन्य भक्त थे , वे वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे । उमके काव्य मेम सख्य और विनय भाव की भक्ति मिलती है। सम्प्रदायिक संकीर्णता उसमें नहीं हैं, धार्मिक भेदभाव रखने वालों की भर्त्सना करते हुये उन्होनें लिखा है।

भारतेन्दु जी समाज-सुधार और नवजागरण के अग्रदूत थे । समाज और देश की दुरवस्ता को देखकर उनकी वाणी करुणा से भीग उठी है, अपनी पीड़ा को उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया है –

रौवहु सब मिलि, आवहु भारत भैइ,
हा ! हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई,,

प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण भारतेन्दु जी की अनेक कृतियों में प्राप्त होता है। हास्य और व्यंग्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है । विशुध्द श्रृंगार-भावना भी अनेक कृतियों जैसे ' प्रेम सरौवर ' , 'प्रेमाश्रु' , 'प्रेम तरंग', 'प्रेममाधुरी', में व्यक्त हुई है।

भारतेन्दु जी ने मुख्य रूप से कवित्त, सवैया, दोहा छन्दों का प्रयोग किया है। भावात्मकता, संगीतात्मकता, कोमलता, उनके काव्य के गुण हैं। काव्यभाषा को उन्होंने एक नवीनता और ताजगी दी है।

भारतेन्दु जी की सबसे बड़ी देन यह है कि उनके पूर्व की वैयक्तिक श्रृंगारमयी काव्यधारा, राष्ट्र को उद्बोधन देने वाली लोकमंगलकारणी धारा के रूप में परिणत हो प्रवहमान हुई, साथ ही उनमें सौन्दर्यवादी जीवन दृष्टि का उन्मेष भी मिलता है।

पद्यांश की सन्दर्भ सहित व्याख्या

1. इन दुखियान को न चैन सपनेहुँ मिलल्यौ
तासौ सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे 'हरिश्चन्द जू' की बीती जानि औध प्रान,
चाहत चलै पै ये तो सँग न समायँगी।

देख्यो एक बारहू पर नैन भरि तोहिं यातै

जौन जौन लोक जहैं तहाँ पछतायँगी।

बिना प्रन-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय

मरेहू पै आँखे ये खुली ही रहि जायँगी।।

सन्दर्भ-प्रस्तुत अंश भारतेन्दु की रचनाओं के संग्रह 'भारतेन्दु ग्रन्थावली' से लिया गया है तथा पाठ्य पुस्तक 'आधुनिक ब्रज भाषा काव्य-दर्पण' और भी अतृप्त दिखाई देती हैं। शरीर के छूटने पर भी प्रिय के दर्शन के लिए उत्सुक मेरी आँखें कदाचित खुली रह जाएंगी। नायिका कहती है-

व्याख्या- मेरा दुखी आँखो को स्वप्न में भी आराम नहीं मिला। अतः ये आँखे सदा व्याकुल और दुःखी होकर घबड़ाती रहेंगी। प्यारे प्रियतम के आगमन की अवधि समाप्त जानकर प्राणी शरीर को छोड़कर जाना चाहते हैं, किन्तु ये आंखें सातह जाने के लिए तैयार नहीं हैं। हे प्रिय! इन आँखोंने तो एक बार भी भरपूर देखा नही है। आपके दर्शन की लालसा लिये ये आँखें जिस-जिस लोक में जायेंगी वहाँ-वहाँ पश्चाताप करेंगी। प्राण प्यारे! तुम्हारे दर्शन की लालसा लिए ये आंखे मरने के बाद भी खुली रहेंगी।

विशेष- (1) इसमें गोपी ने आँखों की दयनीयता के माध्म से प्रिय-दर्शन की प्रार्थना की है।

(2) विरोधाभास तथा मानवीकरण अलंकारों की सुन्दर योजना है।

(3) विप्रलंभ श्रंगार हैं।

2. लाज समाज निवारि सबै पन प्रेम को पसारन दीजिए।

जानन दीजिए लोगों को कुलटा करि मोहि पुकारन दीजिए।

त्यों 'हरिचन्द' सबै भय टारि कै लालन घूँघ टारन दीजिए।

छाँड़ि संकोचन चंदमुखै भरि लोचन आजु निहारन दीजिए।

प्रसंग- यहाँ प्रियतम श्रीकृष्ण के प्रेम मे अनुरक्त नायिका अपने प्रेम पर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए उद्यत्प्रिय से कहती हैं-

व्याख्या-हे प्रिय! अब मुझे समस्त लज्जा-मर्यादा के समूह का परित्याग करके प्रेम के सच्चे प्रण का प्रसार कर लेने दीजिए। सभी को मेरे प्रेमी स्वास्थ से सुपरिचित हो लेने दीजिएऔर मुझे दुष्ट या कुलटा (दुराचारिणी) का सम्बोधन देकर पुकारने-कहने दीजिए। गोपी कहती है कि समस्त प्रकार के भयों को छोड़कर अब हे प्रियतम! लज्जा का घूंघट का परित्याग

कर लेने दीजिए। सभी प्रकार के संकोचों को छोड़कर अपने मुख-चन्द्र को आंखें भर कर निहार लेने दीजिए।

विशेष- (1) इस छन्द में कवि नायिका की उत्कटा प्रेमाभिलाषा का वर्णन किया है जो प्रिय के रूप-दर्शन की लालसा से निरन्तर अतृप्त बनी रहती हैं। बिहारी ने भी इसी प्रकार की भावना यह कहकर व्यक्त की है-

3 वह सुन्दर रूप विलोकि सखी मन हाथ ते मेरे भग्यो सो भग्यो।

चित माधुरी मूरति देखत ही 'हरिचन्द' जू जाय पग्यो पग्यो सो पग्यो।

मोहि औरन सों कछु काम नहीं अब तो जो कलंक लग्यो सो लग्यो।

रंग दूसरों और चढ़ैगो नहीं अलि साँवरो रंग रँग्यौ सो रँग्यौ।।

सन्दर्भ- प्रस्तुत अंश भारतेन्दु द्वारा रचित 'प्रेम माधुरी' से लिया गया है तथा पाठ्य पुस्तक 'ब्रजावधी काव्यापन' से उध्द्घृत है। उध्दव-गोपी संवाद-भ्रमरगीत की परम्परा भक्तिकाल से निरन्तर कवियों का चयन आकृष्ट करती जा रही है। भारतेन्दु ने भी उस परम्परा से सम्बन्धित स्फुट छंद लिखा है।

प्रसंग- कृष्ण के प्रेम की प्रगाढ़ता में अनुरक्त नायिका अपने प्रेम पर सब कुछ बलिहार कर चुकी है। वह अपनी दशा को अपनी सखी से प्रकट करते हुये कहती है –

व्याख्या- हे सखी ! प्रिय श्री कृष्णके उस सुन्दर रूप को देखकर मेरा मन मेरे हाथ से दूर भाग तो गया भाग ही गया। मेरा मन उनकी मधुर मूर्ति के दर्शन करते ही उनमे जाकर घुल-मिल गया तो मिलन ही गया। अब मुझे अन्य जनों से कोई भी काम और सम्बन्ध नही है क्योकि अब तो जो कलंक मुझ पर लगना था वह तो लग ही चुका है। हे सखी अब मेरे ऊपर अन्य किसी का रंग नहीं चढ़ सकता क्योंकि जो रंग चढ़ा था वह तो चढ़ ही गया है। अर्थात मैं श्रीकृष्ण के प्रेम मे रंग गयी हूँ।

विशेष- (1) कवि की शैली लाक्षणिक है, 'रंग दूसरों और बढौगो नहीं' लक्षण है। (2) अनुप्रासमयी शब्दावली का चयन है। (3) भाषा शुद्ध साहित्यिक सरस ब्रज है। (4) सवैया छन्द का प्रयोग है।

4. घेरि घेरि घन आएअ छाय रहे चहुँ ओर,

कौन होत प्राननाथ सुरति बिसारि है।

दामिनी दमक जैसी जुगनूँ चमक तैसी,

नभ में विसाल बग-पंगति सँवारी है।

ऐसी समै 'हरिचंद' गीरह न घरत नेकु,

बिरह-विधा ते होत व्याकुल पियारीहै।

प्रीतम पियारे नंदलाल बिनु हाय वह,

सावन की रात किधौं द्रोपदी की सारी है।।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी द्वारा रचित कविता 'प्रेम-माधुरी' शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इन पंक्तियों में नायिका के विरह का वर्णन किया है। वर्षा ऋतु विरहणी के हृदय की पीड़ा को उदीप्त करती है। नायिका के लिये सावन मास की रात्रि द्रोपदी की साड़ी की तरह लम्बी और अनन्त हो गयी है।

व्याख्या- नायिका कहती है कि आकाश में बादल घिर आये हैं, वे चतुर्दिक आकाश में छा गये हैं। हे प्राणनाथ! किस अपराध में आपने हमें विस्मृत कर दिया है। बिजली चमक रही है, जुगनू भी प्रकाश बिखेर रहे हैं, आकाश में बगुलों की पंक्ति सुशोभित हो रही है ऐसे समय में एक क्षण का भी धैर्य असह्य है। विरह की व्यथा से आज मैं पीड़ित हो रही हूँ। प्यारे प्रियतम कृष्ण के बिना सावन मास की अँधेरी रात द्रोपदी की साड़ी की भाँति लम्बी तथा सीमाहीन ही गयी है।

विशेष- (1) वियोग श्रंगार है।

(2) अनुप्रास का उद्दीपन रूप में चित्रण है।

(3) भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।

(4) षनाक्षरी छन्द है।

5. कधो जू सधो गहो वह मारन,

ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है।

कोऊ नहीं सिम्ब मानिहै हयाँ इक,

स्याम की प्रीति पर्तीति खरीह है।

ये बृजबाला सबि इक सी,

‘हरिचंद’ जू मंडली ही बिगरी है।

एक जो होय तो ज्ञान सिखाइए,

कूप ही में यहाँ भाँग परी है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत अंश भार्तेन्दु द्वारा रचित ‘प्रेम-माधुरी’ से लिया गया है तथा पाठ्य पुस्तक ‘ब्रजावधी काव्यायन’ से उद्धृत है। ऊद्धव-गोपी संवाद-भ्रमरगीत की परंपरा भक्तिकाल से निरंतर कवियों का चयन आकृष्ट करती आ रही है। भारतेन्दु ने भी उस परम्परा से संबन्धित स्फुट छंद लिखा है।

प्रसंग- उद्धव से गोपियां ज्ञान और योग का संदेश अन्यत्र ले जाने की प्रार्थना करती हैं। वे कृष्ण के प्रेम में स्वयं की अनुरक्त बताती हैं। इसलिए निर्गुण ब्रह्म तथा योग उनके लिए व्यर्थ है।

व्याख्या- हे ऊद्धव! आप सीधे चुपचाप मथुरा का मार्ग पकड़ लीजिए जहाँ आपके ज्ञान की गुदड़ी (बोगियों का वस्त्र) रखी है। यहाँ कोई भी तुम्हारी बात

मानने वाला नहीं है। हमारे हृदय में कृष्ण का प्रगाढ़ प्रेम है। उनके प्रति हमारे हृदय से दृढ़ विश्वास है। इस ब्रज की सभी बालाएं एक समान हैं। सारा का सारा नारी समूह बिगड़ा है। एक गोपी हो तो उसे आप ज्ञान का उपदेश दे सकते हैं किन्तु यहाँ कुएं में ही भांग पड़ी है अर्थात सभी गोपियाँ एक जैसी हैं. क्ष

विशेष- (1) गोपियाँ उद्धव से ज्ञान का उपहास करती हैं। सूर की गोपियाँ भी उद्धव से कहती हैं- गोकुल सभी गोपालवासी

जोग अंग साबत जे उधव वे सब बसत ईसपुर कासी।

(2) वियोग श्रंगार है।

(3) भाषा ब्रज भाषा है जिसमें माधुर्य एवं प्रवाह है।

(4) अंतिम पंक्ति में मुहावरे का सुन्दर प्रयोग है।

(5) सवैया छन्द है।